उद्धार पाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए?

यदि यीशु अभी तक तुम्हारे जीवन में नहीं है, तो यही समय है व्यक्तिगत निर्णय लेने का।

अपने पापों से सच्चे मन से पश्चाताप करो।

पश्चाताप केवल शब्दों से नहीं, बल्कि दिल और चालचलन की वास्तविक परिवर्तन से होता है।

यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लो, पापों की क्षमा के लिए।

“जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वह उद्धार पाएगा…” मरकुस 16:16

“पश्चाताप करो, और तुम में से हर एक यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, पापों की क्षमा के लिए; तब तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।”
प्रेरितों के काम 2:38

बपतिस्मा होना चाहिए:

पूरा डुबोकर (न कि छिड़काव से)।

यीशु मसीह के नाम में (केवल “पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा” के शीर्षक में नहीं)।

नये नियम में यही सिखाया गया है:
प्रेरितों के काम 8:16
प्रेरितों के काम 10:48
प्रेरितों के काम 19:1–5

यदि तुम्हारा बपतिस्मा बचपन में हुआ था, या पश्चाताप की समझ के बिना, या केवल परम्परा में यीशु के नाम के बिना हुआ था—तो तुम्हें सही रीति से फिर से बपतिस्मा लेना चाहिए।

और उस क्षण से…
जब तुम सच्चे मन से पश्चाताप करते हो और यीशु के नाम में बपतिस्मा लेते हो, तब परमेश्वर तुम्हें अपना पवित्र आत्मा देता है, जो तुम्हें छुटकारे के दिन तक मार्गदर्शन करेगा, सांत्वना देगा और रक्षा करेगा (इफिसियों 4:30)।

तब तुम्हारे पास भी एक स्वर्गीय मध्यस्थ होगा—यीशु मसीह, जो पिता के सम्मुख तुम्हारे लिए खड़ा है।

“सो जब हमारे पास एक महान महायाजक है जो स्वर्गों से होकर
गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें।”
इब्रानियों 4:14

यदि तुम दुर्बलता में पाप कर बैठो, तो वह तुम्हारे लिए बिनती करेगा। उसके अनुग्रह के अधीन तुम्हारे पाप ढँक दिए जाते हैं।

“जैसा कि दाऊद भी उस मनुष्य के धन्य होने की बात करता है, जिसे परमेश्वर बिना कामों के धर्मी ठहराता है:
‘धन्य हैं वे जिनके अपराध क्षमा किए गए और जिनके पाप ढँके
गए;
धन्य है वह मनुष्य, जिसके पाप का यहोवा लेखा न ले।’”
रोमियों 4:6–8

यदि आज तुमने यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लिया है, तो यह तुम्हारे जीवन का सबसे महान निर्णय है। परमेश्वर के परिवार में तुम्हारा स्वागत है।

मसीह की शांति तुम्हारे हृदय पर राज्य करे। और जैसे तुम पवित्रता में चलते हो, वैसे ही प्रभु तुम्हें आशीष दे और सुरक्षित रखे, जब तक कि वह लौट न आए।

उसी को सारी महिमा, आदर और राज्य सदा-सर्वदा मिलता रहे। आमीन।

Share on:
WhatsApp

Print this post